क्रियायोग ध्यान में माया और ब्रह्म का ज्ञान

3 मार्च 2013 इलाहाबाद । ''माया में रहते हुए माया से अप्रभावित रहने की अवस्था प्राप्त होने पर साधक ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त कर लेता है । ऐसी अवस्था में माया पर पूर्ण विजय प्राप्त हो जाती है और साधक माया को इच्छानुसार प्रकट व अदृश्य करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । भौतिक, सूक्ष्म व कारण जगत माया का स्वरुप है । माया पर पूर्ण विजय प्राप्त होने पर साधक इच्छानुसार भौतिक, सूक्ष्म व कारण जगत को प्रकट व अदृश्य करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है । तीनों जगत से परे होने पर साधक परब्रह्म से पूर्ण एकाकार कर लेता है । यही ज्ञान की पूर्णता है जिसे मोक्ष कहा गया है तथा इस अवस्था को प्राप्त करने वाले साधक को सन्यासी कहा गया है ।'' उक्त विचार अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में व्यक्त करते हुए माया और ब्रह्म के विभिन्न रहस्यों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि माया और ब्रह्म एक दूसरे से ठीक उसी प्रकार संयुक्त हैं जिस प्रकार आग और आग की दाहक शक्ति, बर्फ और उसकी ठन्ढक । माया और ब्रह्म का वही संबंध है जो संबंध समुद्र की लहर और समुद्र का है । जिस प्रकार समुद्र की लहर समुद्र से प्रकट होती है और पुन: समुद्र में विलीन हो जाती है उसी प्रकार माया परब्रह्म से प्रकट होती है और परब्रह्म में विलीन हो जाता है । समुद्र ही लहर के रूप में प्रकट हो रहा है परन्तु कोई भी लहर यह नहीं कह सकती है कि हम समुद्र हैं । उसी प्रकार परब्रह्म स्वयं माया (दृश्य व अदृश्य जगत) के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु दृश्य व अदृश्य जगत की कोई भी रचना परब्रह्म को पूर्ण व्यक्त नहीं कर सकती है । माया और ब्रह्म को छाया और काया के रूप में भी समझा जा सकता है । जिस प्रकार छाया, काया से प्रकट होती है और पुन: काया में विलीन हो जाती है उसी प्रकार माया परब्रह्म के द्वारा प्रकाशित शक्ति है जो स्वप्न (छाया) की भाँति प्रकट व अदृश्य होती है । स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग की साधना कराते हुए आगे कहा कि जब मनुष्य पैर की अँगुली से सिर तक स्वरूप को सीमित रूप में अनुभव करता है तो उसे ही माया की अनुभूति कहा

गया है । ऐसी अवस्था में बीमारी, तनाव, चिन्ता, अज्ञानता प्रकट होती है । क्रियायोग की साधना से स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं के अनन्त और सर्वव्यापी अस्तित्व का ज्ञान प्राप्त होता है जिसे परब्रह्म की अनुभूति कहा गया है । माया और ब्रह्म को दूसरे शब्दों में प्रकृति और परमात्मा, जीव और आत्मा आदि रूपों में भी वर्णित किया गया है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि सामान्य तौर पर घर-परिवार, धन-दौलत आदि को माया समझा जाता है जो सही नहीं है । घर-परिवार माया नहीं है । स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड के बारे में सीमित विचार माया है । ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाएँ परब्रह्म का प्रकाश हैं । समस्त रचनाओं को परमात्मा का स्वरूप न मानकर माया समझना सबसे बड़ी अज्ञानता है जो समस्त कष्ट का मूल कारण है । स्वामी जी ने क्रियायोग का अभ्यास कराते हुए स्पष्ट किया कि पैर की अँगुली से सिर तक स्वरूप परब्रह्म की उपस्थिति है । स्वरूप में प्रकट होने वाली समस्त अनुभूतियाँ जिन्हें हम कड़ापन-ढ़ीलापन, दर्द-आराम, हल्कापन-भारीपन, सुख-दु:ख आदि रूपों में अनुभव करते हैं, ज्ञान तत्व, शक्ति तत्व, शांति तत्व, अमर तत्व, सर्वज्ञ तत्व, सर्वशक्तिमान तत्व, सर्वव्यापी तत्व की उपस्थिति है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा शारीरिक अनुभूतियों को सुख-दु:ख न कहकर परब्रह्म की अनुभूति के रूप में स्वीकार करते हुए उसमें गहन एकाग्रता केन्द्रित करने पर साधक माया के बन्धन से मुक्त हो जाता है । ऐसी अवस्था में सत्य का ज्ञान प्रकाशित हो जाता है । ज्ञान की पूर्णता में स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्माण्ड के सीमित स्वरुप की अनुभूति जिसमें समय, दूरी, शब्द, आकार (सीमित आकार प्रकार), सापेक्षता का सिद्धान्त आदि का अनुभव होता हैं, माया के कारण है । माया का लोप होने पर दृश्य जगत का सीमित रूप अदृश्य होकर सर्वव्यापी अनन्त तत्व में बदल जाएगा, अत: दृश्य जगत को बनाये रखने के लिए माया अनिवार्य शक्ति है । इसलिए आत्मज्ञानी ऋषियों ने परमात्म अनुभूति की पूर्णता में उद्घोष किया है '' **ब्रह्म की जय हो ! माया की जय हो !** Victory to Brahma (Spirit) ! victory to maya! (nature)."

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया, फिनीलैण्ड आदि देशों से आये हुए तीर्थयात्री, कल्पवासी और साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा सायं 4:00 बजे से 7 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा ॲग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने एल0सी0डी0 प्रोजेक्टर के द्वारा आहार विज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों को वीडियो क्लिप्स के द्वारा स्पष्ट किया ।

- योगमाता